THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

हठ जिसे समर्पण करना ही पड़ता है
The stubbornness that does yield

Author – David C. Kennedy
Christian Science Sentinel
Volume 117, Issue 32, August 10, 2015

कई बार हमें लगता है कि हम स्वयं के सबसे बड़े शत्रु हैं। हठी लक्षण और प्रवृत्तियाँ, हमारी उच्चतम इच्छाओं के विपरीत, प्रायः न निकलने वाली खर–पतवार की तरह चिपकी हुई लगती हैं। बाइबल में यहाँ तक कि पॉल विलाप करते हैं, "जो मैं चाहता हूँ, वह मैं करता नहीं, परन्तु जिस से मुझे घृणा है, वही मैं करता हूँ" (रोमियों 7:15)।

जिनसे हम "घृणा" करते हैं शायद हमेशा "बड़ी" चीजें न हो। मनोविज्ञान, मिज़ाज, मनोदशा, या मनोवृति के दावे शायद कई बार कदाचित् हमें थोड़ा–थोड़ा रोकने की कोशिश करें, ठीक उस समय जब हम आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ना चाह रहे हों। उदाहरण के तौर पर, हम शायद गुस्से में प्रतिक्रिया करें जब कि हमें पता है कि हमें शाँत, धैर्यवान, या क्षमाशील होना चाहिए। हम शायद स्वार्थी या असंवेदनशील ढंग से बर्ताव करें, जब हम अत्यधिक दयालुता और प्रेम को दिल से अभिव्यक्त करना चाह रहे हों। या हम आदतन् चुनौतियों के आगे व्याकुलता, हिचकिचाहट, या निराशा के साथ प्रतिक्रिया करें, बजाए कि प्रगति और उपचार की एक आशा के साथ जो हमें आगे बढ़ने और अधिक तत्परता से उपचार पाने में सहायता करेगी।

क्योंकि शरीर, साथ ही साथ आम तौर पर हमारा अनुभव, वही प्रदर्शित करता है जो हमारी सोच में चल रहा होता है, इसलिए इन प्रवृतियों के बारे में पता होना चाहिए, और इन्हें अपनी सोच में पड़े रहने और फैलने नहीं देना चाहिए। परन्तु साथ ही, यह जानना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि उनका हमारे अंदर कोई असली आधार नहीं है। वे हमें विरासत में सौंपे गए किसी भौतिक पैकट का कभी भी हिस्सा नहीं थे, जो पालन–पोषण के वर्षों में विस्तृत होता रहा। और जिस पर इस लेबल के साथ मोहर लगा दी गई, "मैं ऐसा ही हूँ" – क्योंकि ऐसा एक पैकट कभी था ही नहीं।

मेरी बेकर एडी, जिन्होंने क्रिश्चियन साँयस की खोज की और नींव रखी, ने सीखा कि भौतिकता की या परमेश्वर की दोषपूर्ण भौतिक संतान होने बजाए, वास्तव में हम आध्यात्मिक हैं। हमारा उद्गम आत्मा* से है और हम आत्मा की सम्पूर्णता को अभिव्यक्त करते हैं। साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिपचर्स में श्रीमती एडी प्रत्येक के वास्तविक व्यक्तित्व के बारे में लिखती हैं: "मानव आध्यात्मिक और सम्पूर्ण है; और क्योंकि वह आध्यात्मिक और सम्पूर्ण है उसे क्रिश्चियन साँयस में इसी तरह समझना होगा"। और आगे चल कर वह मानव के बारे में इस तरह व्याख्या करती हैं "वह जिसके पास एक भी ऐसा गुण नहीं जो उसे ईश्वर से न मिला हो; ..." (पृष्ठ 475)।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गए हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

क्राइस्ट जीसस ने सिखाया कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, आत्मा के बच्चे, न कि देह के। और उन्होंने सिखाया कि हमारी सम्पूर्णता का सत्य ठीक यहीं और इसी वक्त प्रत्यक्षीकृत किया जा सकता है। उन्होंने कहा, "इसलिए तुम सम्पूर्ण हो जाओ, जिस तरह तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है, सम्पूर्ण है" (मत्ती 5:48)।

हमारी सोच या आचरण में जो कुछ भी हमें आध्यात्मिकता की ओर जाने से रोकता है, परमेश्वर, दिव्य प्रेम के द्वारा उत्पन्न नहीं किया जा सकता है, न ही प्रेम द्वारा हमें प्रदान किया जा सकता है। इसलिए इस की कोई हठी वास्तविकता नहीं है। दिव्य प्रेम इतना अच्छा है कि वह अपनी संतान को बुरे स्वभाव से नही लादता, प्रेम को तो ऐसे स्वभाव का पता ही नहीं। वह तो केवल अपनी स्वयं की अनंत अच्छाई के बारे में जानता है, और हम सब में उस अच्छाई को अभिव्यक्त करता है।

दिव्य प्रेम इतना अच्छा है कि वह अपनी संतान को बुरे स्वभाव से नहीं लादता,
प्रेम को तो ऐसे स्वभाव का पता ही नहीं।

पहचान की एक नश्वर समझ का पता चलने से पहले भी, शाश्वतता से, हम परमेश्वर की काँतिमय अभिव्यक्ति हैं। दिव्य प्रेम सदैव अपनी प्रवृत्ति को हम में गौरवान्वित कर रहा है, निरंतर हमें अपने सौम्य, सम्पूर्ण गुणों से आशीषित करते हुए, समस्त समन्वय, ताकत, और आज़ादी के साथ जो वे लाते हैं।

अपनी अद्भुत आध्यात्मिक धरोहर के कारण, अपनी रोजमर्रा की क्रियाओं में प्रभुता, बुद्धिमत्ता, और शाँति को अभिव्यक्त करना हमारे लिए आसान और स्वभाविक है। दूसरों को निःस्वार्थ भाव से प्रेम करने में, उनकी ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होने में, मानव जाति की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करने के लिए स्वंय को अधिक से अधिक भुला देने में अपनी खुशी को ढूंढना स्वाभाविक है। चुनौतियों का विश्वास के साथ सामना करने और उपचार की एक स्वाभाविक आशा रखना भी हमारे लिए सामान्य है।

अपनी सर्वस्वता के बारे में और प्रेम के आध्यात्मिक विचार, या रूप के नाते हमारी सम्पूर्ण पहचान के बारे में प्रेम का ज्ञान, एक कानून है जो नया जीवन प्रदान करता है और पवित्र करता है। यह क्राइस्ट का कानून है, बुरे विचारों और प्रवृत्तियों को हमारे सच्चे, आध्यात्मिक स्वभाव की गवाही को जगह देने के लिए मजबूर करते हुए। आज नहीं तो कल, हम इस प्रेममयी कानून के प्रभावों को महसूस करना शुरू कर देते हैं और अपनी इच्छा से हम इस के आगे समर्पण कर देते हैं। तभी, वह लक्षण जो इतने हठी दिखाई देते थे, लुप्त होने शुरू हो जाते हैं।

अपने में अनचाहे लक्षणों पर विजय प्राप्त करने के लिए काम कर के और प्रार्थना कर के, मुझे पता चला है – जैसा और भी कईयों को – निष्ठा, दृढ़ता, और धैर्य के महत्व का, और प्रतिफलों का जो यह लाते हैं: शुद्धिकरण, आज़ादी, और खुशी जो हमारे ईमानदार प्रयासों से आते हैं।

यह मानना कितना सुखकर है कि पॉल का वचन सच्चा है: "दाता में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता" (I कुरिन्थियों 15:58)। यदि हमारा उद्देश्य परमेश्वर को अधिक पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित करने के लिए प्रयास करके उसे सम्मान देना और आज्ञा पालन करना है, तब हम प्रेममयी क्राइस्ट को पा लेंगे – परमेश्वर की मृदु उपस्थिति और शक्ति को ठीक अपने पास, हमारे प्रयासों को समर्थन देते हुए और उन्हें सफलता प्रदान करते हुए । क्राइस्ट भौतिकवादी – प्रवृत्तियों में हमारे मत और उनके साथ जुड़ी सारी समझ को धो डालता है। अवगुण दूर हो जाते हैं। कमज़ोरियाँ सुदृढ़ हो जाती हैं। जहाँ सम्भवतः चुनौतियों के समक्ष

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

भयभीत हो कर हिचकिचाने की प्रवृत्ति थी, उसकी जगह हम **परमेश्वर** को धन्यवाद करने की तथा आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ने की स्वाभाविक क्षमता पाते हैं, उसकी सहायता का, उम्मीद के साथ सहारा लेते हुए।

जिन्हें हमने हठी प्रवृत्तियाँ सोचा था, आध्यात्मिक प्रगति के साथ लुप्त हो जाती हैं, यह प्रमाणित करते हुए कि वे असल में कभी भी हठी या वास्तविक नहीं थी । उनकी जगह रह जाती है शाश्वत सम्पूर्णता की गवाही – अस्थिर न होने वाली अच्छाई, जिस का हम दावा कर सकते हैं, यहाँ और अभी।

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.